ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता संग्राम में हिंदी साहित्य का योगदान

डॉ. विनोद श्री राम जाधव

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग प्रमुख

एम. एस. एस. कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,

अम्बड, जिला-जालना, महाराष्ट्र

भारत के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग भाषाएं बोली जाती है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। भारत के सभी प्रति से जुड़ने के लिए एक ही भाषा की आवश्यकता होती है, जिसे सारे भारत के वासी जानते हो और यह काम हिंदी से ही साध्य हो सका। हिंदी भारत के केवल उत्तर भारत की ही नहीं अपितु एक विस्तृत भूमंडल की मुख्य भाषा है। आधुनिक हिंदी भाषा का विकास खड़ी बोली से हुआ जो की एक सीमित क्षेत्र की बोली है। अपने इस सीमित क्षेत्र को फांदकर काव्य और जनसंचार की भाषा का रास्ता तय करके राजभाषा का दर्जा प्राप्त करना एक अविस्मरणीय घटना है।

भले ही कोई मनुष्य अपने आंचलिक बोली यह परिभाषा से प्रभावित रहता है परंतु जैसे ही वह हिंदी के संपर्क में आता है तो वह उसमें समा जाता है। भारतेंदु जी के अनुसार हिंदी एक ऐसी भाषा जो पूरे देश को आपस में समेटे हुए हैं। जिसमें न केवल किसी एक प्रांत की वेदना व्याप्त रहती है बल्कि जो पूरे देश की वेदना को उजागर करने की क्षमता रखती हो वही भाषा हिंदी भाषा है।

भारत कई बार अनेक विदेशी शक्तियों से आक्रांत रहा परंतु यह अति दुर्भाग्य की बात है कि जो राष्ट्रीयता आधुनिक काल में अपने चरमोत्कर्ष पर थी वही आदिकाल की समय अवधि में होती है तो शायद आज भारत की इतनी दुर्दशा नहीं होती।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

वैसे तो राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की विधिवत शुरुआत सन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ हो गई थी। किंतु 20वीं सदी के आरंभ से इसकी तीव्रता में गुणात्मक परिवर्तन आया। एक आधुनिक राष्ट्र राज्य के रूप में भारत जन्म ले रहा था और उसके साथ ही राष्ट्रीय भावना एवं राष्ट्रीय पहचान व अस्मिता का सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय पुनर्जागरण की चेतना भी उभरने लगी थी। राष्ट्रीय जागरण अब संस्कृतिक जागरण में रूपांतरित हो रहा था। राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक जीवन और राष्ट्रीय जीवन पर भी पड़ा। भारतीय संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा ने अपनी पहचान को पाने की आकुलता में

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

चुनौती राष्ट्र नायकों के समक्ष रख दी थी। औपनिवेशिक विमर्श से उत्पन्न राष्ट्रीयता की भावना का उदय भारत समेत लगभग सभी गुलाम देशों में हुआ। एक राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है यह सवाल स्वाधीनता सेनानियों और सुधारको के मानस को आंदोलित करता रहा। 19वीं सदीं के सुधारको के समक्ष जब यह प्रश्न उठा की जो नवीन भारत जन्म ले रहा है उसकी राष्ट्रभाषा क्या हो तब अनायास ही वे इस निर्णय पर पहुंचे की नवीन भारत की राष्ट्रभाषा केवल हिंदी ही हो सकती है कोई और नहीं।

राष्ट्रवाद की भावना को संपूर्ण भारतवर्ष के जन-जन में फैलने के लिए अतः प्रांतीय संपर्क की आवश्यकता महसूस की गई तब भी यह महसूस किया गया कि सभी प्रादेशिक पूर्व ग्रहों से ऊपर उठाकर वह (संपर्क भाषा) भारतीय भाषा हिंदी ही हो सकती है। क्योंकि एक बहुभाषी देश में स्वाधीनता की चेतन को प्रत्येक गांव और प्रत्येक आदमी तक पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय एकता के निर्माण के लिए हिंदी ही एकमात्र अस्त्र हो सकती है। राजा राममोहन राय ने भी महसूस किया की जनता में जाने और और उसे आंदोलन करने के लिए अंग्रेजी का कोई उपयोग नहीं है उसे अपनी भाषा के द्वारा ही आंदोलित करना होगा। राष्ट्रीय आजादी के लिए राष्ट्रीय एकता और अखंडता अनिवार्य होती है और जब तक राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बांधने वाला सूत्र नहीं होता हैं तब तक कोई भी परिकल्पना साकार नहीं हो सकती है। अतः हिंदी के लिए चुनौती कई स्तरों पर थी उस एकता सूत्र की पहचान करवाने के लिए उस दौर के लगभग सभी राष्ट्रीय नायकों ने विचार किया। "1875 में ब्रह्म समाज के प्रधान नेता श्री केशव चंद्र सेन ने कहा कि अभी भले ही कितनी ही भाषाएँ भारत में प्रचलित हो किन्तु उनमें से हिंदी भाषा ही सर्वत्र प्रचलित है इसलिए हिंदी को भारतवर्ष की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज रूप से यह एकता संपन्न हो सकती है।"(1)

राष्ट्र निर्माण और भाषा निर्माण की दोहरी प्रक्रिया समानांतर रूप से एक दूसरे से सहयोग करते हुए हो रही थी। हिंदी राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतीक बन चुकी थी। राष्ट्र मुक्ति की आकांक्षा के सपनों को आंखों में लिए नई सामाजिकता के निर्माण के लिए भारत की विविधता के इंद्रधनुषी रंग को एक भाषा के माध्यम से पड़कर उनमें अंतर निहित सौंदर्य को उद्घाटित करने के लिए भाषागत वैविद्य की बाधा को पाटकर उसमें राष्ट्रीय एकता व स्वाधीनता के विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ और सक्षम माध्यम के रूप में हिंदी की पहचान हो चुकी थी। इसी को लक्षित करते हुए बंकिम चंद्र चटर्जी कहते हैं –"हिंदी एक दिन भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी क्योंकि हिंदी भाषा की सहायता से भारत के विभिन्न प्रदेशों में ऐक्य बंधन स्थापित कर भारत बंधु कहलाने योग्य है।"(2)

भारत के स्वत्व और पहचान के संदर्भ को चिन्हित करके ही राष्ट्र प्रेम को जन-जन में फैलाने के लिए हिंदी भाषा को माध्यम के रूप में चुना गया तथा इसे भारत की समस्त उन्नति का मूल मंत्र घोषित किया गया। इसलिए भारतेंदु जी ने कहा है—

" निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल
निज बिन भाषा ज्ञान के मिटत न हिय क़ो शुल ।"(3)

पहचान का संबंध अतीत से होता है अतः अपने अतीत के गौरव को पुनः सृजीत कर अपनी परंपरा का गौरव गान कर भारतीय नवजागरण की भाषा बनने का गौरव हिंदी को ही

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

जाता है। ईश्वर स्वास्थ्य से ही स्वदेश प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग स्वदेशी भाषा और अंततः स्वतंत्रता की प्राप्ति का लक्ष्य इसी नवजागरण और औपनिवेशिक विमर्श की कोख से पैदा होता है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने अपनेपन की भावनाओं को गाढ़ापन प्रदान किया है। सार्वजनिक जीवन के सभी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग का प्रश्न इसी औपनिवेशिक विमर्श की प्रसव पीड़ा से उत्पन्न हुआ था। यही कारण था कि हिंदी का मसला सिर्फ एक भाषा का मसला न रहकर एक राष्ट्रीय भाषा और एक राष्ट्रीय पहचान का भी था। यही कारण था कि भारतेंदु जी ने सन 1882 में शिक्षा आयोग के समक्ष इस पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहा था—" सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग होता है यही ऐसा देश है जहां ना तो अदालती भाषा हैं। हिंदी का प्रयोग होने से जमींदार साहूकार, व्यापारी और सभी को सुविधा होगी क्योंकि सभी जगह हिंदी का ही प्रयोग है।"

हिंदी भाषा भारत के अधिकांश प्रदेशों और लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली एक ऐसी भाषा है जिससे यह आसानी से सर्वाधिक भाषा के पद पर स्थापित हो सकती है और राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में कार्य कर सकती है। आश्चर्य की बात यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव उन महापुरूषों ने दिया जिनमें अधिकांशों की मातृभाषा हिंदी न होकर बांग्ला, गुजराती, मराठी या कोई अन्य भाषा थी। हिंदी और अहिंदी भाषा क्षेत्र के सभी नेताओं ने इसे सम्मिलित रूप से भारत की संस्कृति और राष्ट्रीय भावना का प्रतीक माना। राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र प्रेम को साधने के लिए सुभाष चंद्र बोस ने भी हिंदी की भूमिका को रेखांकित इन शब्दों में किया है—" देश की एकता के लिए एक भाषा का होना जितना आवश्यक है उससे अधिक आवश्यक है देश भर के लोगों में देश के प्रति विशुद्ध प्रेम तथा अपनापन का होना। यदि आज हिंदी देश भर की भाषा मान ली गई है तो यह अपनी सरलता, व्यापकता और क्षमता के कारण यह किसी प्रांत विशेष की भाषा नहीं बनेगी बल्कि सारे देश की भाषा बनेगी।"

भाषा की मुक्ति के बिना राष्ट्र की मुक्ति संभव नहीं है इसीलिए भाषा के स्तर पर भी मुक्ति की मांग स्वाभाविक है। अंग्रेज और अंग्रेजी के वर्चस्व को तोड़ना प्रकारांतर से राष्ट्रीय अस्मिता को प्राप्त करने का दूसरा नाम ही आजादी था। इसीलिए कुछ राष्ट्रीय नेताओं ने स्वदेशी को अपनाना और विदेशी का बहिष्कार करना यह संकल्प लेकर स्वाधीनता की समग्र परिकल्पना को इससे जोडा। स्वदेशीवस्तु स्वदेशी भाषा, स्वराज और स्वतंत्रता को विकसित करने की मांग करने लगे। क्योंकि भाषा की स्वायत्तता के बिना मानसिक स्वराज संभव नहीं है। शिक्षा, प्रशासन, न्याय आदि सभी क्षेत्रों में हिंदी को लागू करने की मांग और ज्यादा जोर पकड़ने लगी अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी शिक्षा विदेशी दासता का प्रतीक मानी जाने लगी और हिंदी हिंदुस्तान की पहचान तथा हिंदुस्तान की आत्मा के रूप में जानी जाने लगी । सभी के दिलों दिमाग पर एक ही बात थी हिंदी है हम, हिंदी है हम, वतन है हिन्दोस्तान हमारा सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा…।

पूरे भारतवर्ष के स्वाधीनता सेनानियों ने हिंदी और हिंदुस्तान को अभिन्न समझ कर ही राष्ट्र प्रेम के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति भी अपने आस्था व्यक्त की। राजनीतिक पार्टी

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसी भावना को केंद्र में रखकर अपने विशेष अधिवेशन में हिंदी के पक्ष में प्रस्ताव पारित कर अपने कार्यवाही हिंदी में करने का फैसला किया सन 1906 में कांग्रेस अधिवेशन में दादा भाई नौरा जी ने प्रथम बार स्वराज हिंदी शब्द का प्रयोग किया। तदंतर तिलक ने इसे विकसित करते हुए जोरदार शब्दों में कहा –"स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे।"।तिलक के ये वाक्य भारत की सभी जनता के दिलों दिमाग में गूंजने लगे । स्वराज प्राप्ति की चाह की यह चिंगारी अब आम लोगों से जुड़ने लगी। जो कांग्रेस पढ़े लिखे लोगों की पार्टी थी उससे आम लोगों को जुड़ने और जोड़ने में और राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को व्यापक आधार देने में हिंदी एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित हुई। महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में करोड़ों निरक्षर और भूखे लोगों को जोड़ने के लिए हिंदी भाषा को ही उचित समझा। गांधीजी की मान्यता के अनुसार– "भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है । यदि स्वराज ऐसे भारतियों का हैं जो अंग्रेजी पढ़े लिखे हैँ और अंग्रेजी भाषा को ही संपर्क भाषा समझते हैँ तो कोई बात नहीं लेकिन यदि वह करोड़ों निरक्षर और सताए हुए आम जानो का हैं और अगर वे सब हिंदी को ही संपर्क भाषा समझते हैँ तो संपर्क भाषा के साथ साथ राष्ट्र भाषा भी केवल और केवल हिंदी ही होनी चाहिए।" हिंदी को आम आदमी जोड़ना यानि कि स्वाधीनता से जोड़ना होता था या हम ऐसा भी कह सकते हैं कि देश प्रेम के कारण स्वाधीनता संग्राम से जुड़ने वाले सभी आम जन अपनेआप हिंदी से भी जुड़ गए थे ।

हम ऐसा भी कह सकते हैँ कि स्वाधीनता का महत्व समझाने के लिए और अंग्रेजों के खिलाफ सेना के रूप में जनता इकट्ठी करने के लिए हिंदी भाषा ही एकदम सटीक, सरल और मन को छू लेने वाली भाषा थी। इसीलिए हम कह सकते हैं कि स्वाधीनता संग्राम में आज़ादी प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा एक सशक्त माध्यम थी। राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता vआंदोलन में हिंदी की भूमिका को पहचान कर ही राष्ट्र नायकों ने उसे राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित किया उन राष्ट्र नायकों में स्वामी दयानंद सरस्वती, सुभाष चंद्र बोस, रविंद्र नाथ टैगोर, लोकमान्य तिलक, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडनऔर राजेंद्र प्रसाद आदि प्रमुख थे। हिंदी के महत्व को समझकर ही स्वाधीनता सेनानियों ने उसके माध्यम से राष्ट्रीय विचारों को लोगों तक पहुंचाने के लिए हिंदी पत्रकारिता को अपनाया। पंडित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी और तिलक आदि सभी हिंदी की पत्रकारिता के माध्यम से जन जागृति, समाज सुधार, राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति का माहौल बनाना आदि कार्य करते रहे। 'मास' मिडिया से कट कर महान से महान विचारक और समाज सुधारक भी गंत्वय तक नहीं पहुंच पाते। इसीलिए हिंदी को मांस की भाषा बनाकर मास कोआंदोलित और संगठित करने का एक सशक्त माध्यम बना हिंदी पत्रकारिता। हिंदी आंदोलन और स्वाधीनता आंदोलन दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर आगे बढ़ते गए। हिंदी का साहित्यकार और स्वाधीनता सेनानी दोनों एक ही राष्ट्रीय भावनाओं को अपने-अपने तरीको से लेकर चलते गए। हम कह सकते हैँ कि उस युग में एक साहित्यकार भी स्वाधीनता सेनानी बन कर देश सेवा कर रहा था और एक स्वाधीनता सेनानी भी साहित्यकार कि भूमिका निभा रहा था।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

इन दोनों वर्गों में रास्तों का भेद था मनोभेद नहीं था, क्योंकि दोनों का लक्ष्य एक ही था राष्ट्र कि आज़ादी और राष्ट्रीय एकता व अखंडता को चिरंजीवी बनाये रखना। साहित्य और राजनीती उस समय एक मिशन था प्रोफेशन नहीं। इसीलिए उस समय राजनीती का सूरज साहित्य को समझा जाता था जो उसके इर्द गिर्द रहकर प्रकाश दिखाता रहे। और इनकी जोड़ी एक हमसफ़र कि तरह बन गई। यह सफर तब तक चलता रहा जब तक के हमारे देश को स्वाधीनता नहीं मिल गई।

सन्दर्भ सूची:

(1) बालमुकुंद गुप्त निबंध होली प्रथम भाग प्रश्न संख्या 159

(2) आचार्य नरेंद्र देव राष्ट्रीयता और समाजवाद

(3) भारतेंदु की पत्रकारिता लेख भारतेंदु हरिश्चंद्र पृष्ठ 144 ऐसे ग्रन्थ जिनकी मदद आलेख पूरा करने में ली गई हैं…..

(1) हिंदी का इतिहास –डॉ नगेंद्र

Cite This Article:

डॉ. जाधव व. श्र. (2024). *स्वाधीनता संग्राम में हिंदी साहित्य का योगदान*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 84–88) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646691